CREDIT CONTROL

Page No.: 1
Date: 01/08/2020

(Part - B)

(Conditions Essential for Success of Credit Control Policy)

केंद्रीय बैंक के साख नियंत्रण की नीति की सफलता निम्नलिखित शर्तों पर आधारित हैं:-

1. सर्वप्रथम तो केंद्रीय बैंक का सम्पूर्ण मुद्रा-बाजार पर प्रभावपूर्ण नियंत्रण होना चाहिए। मुद्रा-बाजार की विभिन्न संस्थाओं का जो साख उधार मुद्रा के व्यापारी के रूप में कार्य करती हैं, केंद्रीय बैंक से सम्बद्ध होना अनिवार्य है। सम्पूर्ण बाजार पर नियंत्रण नहीं होने के कारण ही भारत के केंद्रीय बैंक रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया का देशी बैंकर एवं महाजनों, जो भारतीय मुद्रा-बाजार का एक महत्वपूर्ण अंग हैं, पर कोई नियंत्रण नहीं है। ऐसी स्थिति में यहाँ साख नियंत्रण में केंद्रीय बैंक को कठिनाई होती है।

2. साख-नियंत्रण की नीति की सफलता के लिए देश में एक सुसंगठित मुद्रा-बाजार का होना भी अत्यंत आवश्यक है। सुसंगठित मुद्रा-बाजार में विभिन्न प्रकार की संस्थाएँ कार्य करती हैं, जिनका केंद्रीय बैंक से निकटतम सम्पर्क रहता है। सुसंगठित मुद्रा-बाजार की स्थापना केवल उन्हीं देशों में सम्भव है जिनके राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों बहुत अधिक विकसित

Scanned with CamScanner

स्थिति में हों तथा इनके आंतरिक भुगतान में विनिमय बिलों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता हो।

3. साख नियंत्रण नीति की सफलता आर्थिक एवं मौद्रिक क्षेत्र में केन्द्रीय बैंक की स्थिति एवं नेतृत्व पर भी निर्भर करती है। इसके लिए केन्द्रीय बैंक में जनता का पूरा-पूरा विश्वास होना चाहिए। साथ ही, केन्द्रीय बैंक एवं व्यावसायिक बैंकों में परस्पर अधिक सहयोग की भावना का होना भी नितांत आवश्यक है।

4. केन्द्रीय बैंक को साख नियंत्रण का विस्तृत वैधानिक अधिकार भी प्राप्त होना चाहिए जिससे वह विभिन्न बैंकों के क्रियाओं को नियंत्रित कर सके।

(Different Methods of Credit Control)

साख-नियन्त्रण के दो पक्ष हैं :—

(1.) परिमाणात्मक नियन्त्रण तथा

(2.) गुणात्मक नियंत्रण

परिणात्मक नियंत्रण के तरीकों का सम्बन्ध साख के परिमाण एवं उनकी कीमत के नियंत्रण से है। पहले यह नाम धारणा

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

थी कि साख का परिमाणात्मक नियन्त्रण ही पर्याप्त है, क्योंकि साख के परिमाण के नियन्त्रण से ही उसके उपयोग एवं व्यवहार का भी नियंत्रण स्वयं हो सकता है। यदि व्यावसायिक बैंक उत्पादन एवं वाणिज्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साख की सृष्टि करें और केन्द्रीय बैंक उत्पादन एवं वाणिज्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सहायता दे तो खुद-ब-खुद गुणात्मक नियंत्रण भी हासिल हो जाता है।

अतः परिमाणात्मक नियंत्रण के साथ-ही साख गुणात्मक नियन्त्रण भी अनिवार्य है। केन्द्रीय बैंक साख-नियंत्रण के लिए साधारणतया निम्नलिखित तरीकों का प्रयोग करता है! —

(A) परिमाणात्मक नियंत्रण के तरीके निम्नांकित तीन हैं :—

1. बैंक-दर नीति,
2. खुले बाजार की क्रियाएँ,
3. व्यावसायिक बैंकों के नकद कोष के अनुपात में परिवर्तन।

(B) उपरोक्त परिमाणात्मक तरीकों के अतिरिक्त साख के गुणात्मक नियंत्रण के निम्नांकित 6 तरीके भी है! —

1. साख की रैशनिंग
2. प्रत्यक्ष कार्यवाही
3. नैतिक दबाव
4. प्रचार
5. शेयर बाजार के ऋण की सीमा में परिवर्तन करना, तथा उपभोक्ता साख का नियंत्रण।

Thank You

Scanned with CamScanner